Submission of Documents for Minor Research Project

1. **A copy of the proof about uploading of Executive summary of the report, Research documents, monograph, and academic papers published under Minor Research Project on the website of the University/College.**

मधु काँकरिया के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का विस्तृत अध्ययन किया है| मधु कांकरिया के अब तक छह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं|

1. खुले गगन के लाल सितारे
2. सलाम आख़िरी
3. पत्ताखोर
4. सेज पर संस्कृत
5. सूखते चिनार
6. हम यहाँ थे

1) 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में लेखिका मधु कांकरिया ने नक्सलवादी आंदोलन और क्रांतिकारियों के जीवन का चित्रण किया है| सन् 1970-72 में मध्य कलकत्ता के हाथीबगान इलाके की घटना का चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है| लेखिका मधु कांकरिया के सगे भाई इस आंदोलन से जुड़े हुए हैं| अत: उन्होंने इस आंदोलन को काफी करीब से देखा है और सूक्ष्म घटनाओं का चित्रण इसमें उन्होंने किया है|

नक्सलवादी आंदोलन में किसी भी तरह की कोई भावनाये नजर आती दिखाई नहीं देती| साथ हि साथ दुःख, दर्द, आक्रोश, वेदनाएँ आदि को अनसुना किया जाता है| उपन्यास में लेखिका मधु कांकरिया ने कुछ गिने-चुने पत्रों के माध्यम से कथावस्तु को प्रभावित करने का सफल प्रयास किया है| मणि, इंद्र, गोपाली दा और कॉमरेड दिलीप विश्वास साथ ही साथ कॉमरेड शंभू, कॉमरेड सुभाशीष एंटी नक्सलाइट के प्रमुख इंस्पेक्टर रमेन नियोगी आदि के माध्यम से कथानक को प्रभावी बनाया है| सन् 1967 ई. में पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में नक्सलवादी आंदोलन छिड़ गया था| इस आंदोलन का नारा था 'भूमि उसकी हल जिसका, जोते जो उसे|' इस आंदोलन में भूमिहीन किसानों ने जमीदारों की भूमि को अपने कब्जे में ले लिया था| इसी कारण शोषक और शोषित वर्ग के बीच में यह गहरा आंदोलन छिड गया था| इस आंदोलन का एक हिस्सा इंद्र भी था|

इंद की याद में भटकती हुई मणि इतने सालों से भी अपने जीवन में फैसला नहीं ले सकती| यही उनके दुख की कहानी इस उपन्यास में लेखिका मधु कांकरिया ने चित्रित की गई हैं| अतः नारी जीवन में

भटकाव के सिवा और कुछ भी नहीं है| यही उन्होंने साबित करने का काम किया है| मणि अंत तक इंद्र की राह देखती रहती है लेकिन उसे आखिर में करीब-करीब तीस सालों के बाद पता चलता है कि वो वापस नहीं आने वाला| मणि को लगता है कि इंद्र इस क्रांतिकारी आंदोलन का 'लाल सितारा' बन गया होगा|

'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में लेखिका मधु कांकरिया ने नक्सलवादी आंदोलन के साथ ही पारिवारिक संघर्ष का भी चित्रण किया है| प्रस्तुत उपन्यास की कथावास्तु लेखिका मधु कांकरिया ने कुछ गिने चुने पात्रों के माध्यम से सशक्त बनाई हैं| नक्सलवादी आंदोलन पर यह उनका जीता जागता उपन्यास है| लेखिका मधु कांकरिया ने एक अलग विषय पर अपनी कलम चलाई हैं| नक्सलवादी आंदोलन में कई पारिवारवालोने अपनी संतानों को क्रांतिकारियों के आंदोलन में 'लाल सितारे' बना दिए है|

2) सलाम आख़िरी - मधु कांकरिया का 'सलाम आख़िरी' सन् 2002 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित यह दूसरा उपन्यास है| इसका तीसरा संस्करण 2016 में प्रकशित हुआ है| प्रस्तुत उपन्यास देह के बाजार और औरत के सच को बेबाकी से बयान करता उपन्यास है| इसमें वेश्याओं और वेश्यावृत्ति की समस्याओं को स्पष्ट किया है| मधु जी ने प्रस्तुत उपन्यास में वेश्याओं की एक अलग रहस्यमयी दुनिया का चित्रण प्रस्तुत किया है| स्त्री देह की रहस्यमयी दुनिया के संदर्भ में लेखिका कहती है, "शताब्दियों का बोझ ढोती हुई| देह के मंदिरों और देह के पुजारियों की यह वह दुनिया है जो वितृष्णा में लिपटी एक अजीब सा सम्मोहन जगाती है| यहाँ जिंदगी का शोर-शराबा है, हर गली के हर कमरे का अलग-अलग इतिहास...जहाँ हर रात देह ही नहीं उघड़ती हैं वरन् आत्माओं का भी चीर-हरण होता रहता है|"[6] अत: स्पष्ट है कि यहाँ स्त्री देह की खुले आम बिक्री होती है|

कलकत्ता महानगर के विभिन्न वेश्याओं के लालबत्ती नाम से पहचाने जाने वाले ये इलाके हैं सोनागाछी, बहुबाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिदिरपुर, लालबत्ती आदि छोटी-मोटी गलियों में चलनेवाले वेश्याव्यवसाय का और वेश्याओं के जीवन का भयावह, कुरूप एवं नग्न वास्तविक रूप का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में है| इन बस्तियों में वेश्याओं को अपनी मर्यादाओं, सांस्कृतिक, परंपराओं, परिवार, समाज आदि का कोई बंधन और भय नहीं होता| प्रस्तुत लालबत्ती इलाके में अट्ठारह से चालीस बयालीस उम्र की कई वारांगनाएँ है| इनमें विभिन्न देशेंकी वेश्याएँ मौजूद है, जिसमे आगरा, नेपाल, बंगाल और अन्य देशों की भी वेश्याएँ हैं| ये वेश्याएँ ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए भड़कीले कपड़े| रँगे होंठ| सस्ती चमक के आभूषण| भड़कीला मेकअप करके गलियों में और रास्ते के किनारे खड़ी रहती हैं| यहाँ ऑन लाइन वेश्याएँ भी मौजूद है| वेश्याओं को उच्च श्रेणी का दर्जा देने के लिए लाईनवालियाँ नाम से भी संबोधित करते हैं|

वेश्याएँ कम और जादा रेट लेने वाली मिल जाती है| उन्हें जीवित व्यक्ति का दर्जा नहीं दिया जाता बल्कि उनकी तुलना पशु से की जाती है| नारी देह के संदर्भ में लिखा है, "ईश्वर की मानव को अमूल्य भेंट

प्रेम और नारी की सबसे मूल्यवान संपत्ति शील के खरीद-फरोख्त के ये रास्ते|"[7] इन बस्तियों में समाज के सभी प्रकार के लोग अपने जीवन में मौज-मजा और आनंद लाने के लिए झूठे प्यार को पाने के लिए रुपयें को उड़ाने यहाँ आते हैं| ये बदबूदार इलाके, टूटे कमरे के दीवार ऐसी असुविधाजनक जगह पर देह के बाजार चलते हैं| कई वेश्याएँ कम शिक्षित, कम उम्र, नाबालिक और डरी-सहमी होती है|

लेखिका मधु कांकरिया ने वेश्याओं और वेश्यावृत्ति के चित्रण में देह की पीड़ा, आत्मग्लानी, भावनिक तनाव, नए जिंदगी को तलाश करती बेबस नारियाँ दर्शाई हैं, जो वास्तविक प्रतीत होती है|
उपन्यास ने नूरी, कृष्णा, रमा, नलिनी, जुली और चंपा इन वेश्याओं के जीवन को करीब से चित्रित किया है| सुकीर्ति से यहाँ की वेश्याएँ अपने नीजि जीवन की वास्तविक कहानी का बयान अपना नाम और तस्वीर न छपवाने की शर्त पर करती है|
प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि कोई भी नारी अपनी मर्जी से वेश्याव्यवसाय में जाना नहीं चाहती| बुरे हालात ही नारी को विवश करते हैं| सभी वेश्याओं की कहानियाँ एक जैसी ही है| इन सभी का दर्दनाक दुःख एक जैसा पाया जाता है| इनकी कहानियों के माध्यम से लेखिका मधु कांकरिया जी इनके उत्थान के लिए प्रयत्न करना चाहती हैं| सुकीर्ति आत्मगौरव से वंचित इन नारियों में अपने अत्मस्मान, ऊँचाईयों, प्रेम, सम्मान और आत्मगौरव लाना चाहती है|

वर्तमान युग में वेश्याव्यवसाय वासना से भरा है| लेकिन आजसे पचास-साठ साल पहले इस व्यवसाय को बुरा नहीं माना जाता था, क्योंकि इसमें उच्च स्तर की कलाएँ भी होती थी| उस ज़माने में कविता, शेरों-शायरी, मुहावरे, कहावते और दोहों आदि के बड़े-बड़े कोष वेश्याओं के पास होते थे| वेश्याओं की संभाषण कला हाजिर जवाबी देखने लायक होती थी| नृत्य, संगीत आदि का मजा लूटने वाले रसिक मिजाजी आमिर लोग, कला के शौकीन एवं सुसंस्कृत व्यक्ति तक वेश्यालय में आते थे| कोई भी व्यक्ति इन वेश्या बस्तीयों में खुले आम और अपराधहिन भाव से जाते थे|

लेखिका मधु कांकरिया ने जिस प्रकार वेश्याव्यवसाय में नाखुशी से आई वेश्याओं का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया है| उसी प्रकार आत्मग्लानी से भरी और दुःख से सिमटी वेश्याओं का अपने जीवन में समर्थता का रूप दिखाया गया है| देह पीड़ा से पीड़ित रहने के बावजूद कई वेश्या अपने आत्मा की सौंदर्यता सजाकर रखती है| उन्हीं में से एक गायत्री नामक पात्र है| तीस साल की गायत्री दो बच्चों की माँ है| बहुबाजार के प्रेमचंद बारेल स्ट्रीट पर गायत्री अपना वेश्याव्यवसाय करती है| वह अपने पति के उकसाने पर ही वेश्याव्यवसाय में आ गई है| गायत्री इस व्यवसाय में आकार भी अपने विचारों को उच्च स्तर पर रखती है| अमानवीय कृत्यों का विरोध करती है| बारह साल की एक भोली-भाली लडकी को गायत्री वेश्या के चंगुल से छुड़ाती है|

'सलाम आख़िरी' उपन्यास वेश्यावृत्ति में फसने वाली कई बेबस नारियों का चित्रण है| प्रस्तुत उपन्यास वेश्याओं के विवश जीवन का वास्तविक दर्शन करने वाला है| वेश्याव्यवसाय के चक्रव्युव में फ़ँसी नारी सहजता से सामान्य पारिवारिक जीवन में नहीं लौट सकती| ये वेश्याएँ शारीरिक एवं मानसिक रोगों का शिकार बन जाती है| कई बीमारियों जैसे गुप्तरोग, एच. आई. वी. पोजिटिव से उनकी मृत्यु होती है| जिसपर कोई इलाज किया नहीं जाता|

3) 'पत्ता खोर' – 'पत्ता खोर' मधु कांकरिया का 2005 में और प्रथम आवृति 2012 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित तीसरा उपन्यास है| प्रस्तुत उपन्यास में एक युवक के जीवन की पूर्ण कहानी व्यक्त की गई है| उपन्यास का मुख्य पात्र आदित्य है| कथावास्तु का केंद्रबिंदु आदित्य है| आदित्य के माता-पिता हेमंत बाबू और वनश्री है| वे दोनों नौकरी करते है| नौकरी की व्यस्तता के कारण पुत्र आदित्य की ओर उनका ध्यान नहीं है| आदित्य बारह-तेरह सालों से फ्लॅट में अकेला पड़ा हुआ है| माता-पिता के स्वभाव में जमीन-असमान का अंतर है| पिता शांत और संत स्वभाव के है| उनके विरुद्ध स्वभाव की माँता है| जिसमे मिजाज और बहुँत गुस्सा भरा हुवा है| इस परिवार के संदर्भ में लेखिका का विचार है कि "एक ही घर में रहते हुए भी तीन जिंदगियाँ अपने-अपने द्वीप में बहती-विचरती रहीं, बिना किसी को छूते हुए|"[11] आदित्य एक ही घर में अकेला रहने के कारण उसके मन में अलग-अलग विचार आ जाते हैं| पारिवारिक असंतोष के कारण आदित्य जीवन का कुछ नया रास्ता ढूँढना चाहता है| आदित्य बारहवीं कक्षा में पढ़ता है| आदित्य को पढ़ाई से अधिक संगीत, गीत आदि में रूचि है| दुनिया के प्यार को पाने के लिए वह प्यार भरे गीतों को निर्माण करना चाहता है| जीवन में संगीत और गीत को अपनाने की इच्छा से वह नशा की ओर बढ़ जाता है| उसे ताड़ी और गांजा आदि का सेवन करना पसंद आता है|

आदित्य सोलहवें वर्ष में ही धूम्रपान की नशा में डूब जाता है| पिता हेमंत बाबू उसे केवल उपदेश देने का काम करते हैं| *धूम्रपान के कारण वह स्कूल नहीं जा सकता| अतः* आदित्य परीक्षा में, पढ़ाई में बाधा आने के कारण घर से भाग कर पूरी नगर के 'सम्राट' होटल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करता है| होटल में एक युवक के माध्यम से आदित्य हेरॉयन का नशा करता है| हेमंत बाबू के आठ-नौ हजार में घर चलाना वनश्री को मुश्किल बन जाता है| आर्थिक विपन्नता के कारण उनके परिवार की शांति, सुख, आनंद समाप्त हो जाता है|

आदित्य अपने परिवार के बिगड़े वातावरण को देखकर फिर अपने मित्रों के साथ हेराँइन का नशा करने लगता है| धीरे-धीरे गहरी नशा का आदी हो जाता है| आदित्य निराश, हताश, होकर जिंदगी से भागना चाहता है| उनके रग रग में नशा ही नशा भरा हुआ है| नशा का असर

उसके शरीर पर ऐसा होता है कि एक दिन उसके शरीर में कँपने निर्माण होने लगती हैं| शरीर अकड़ने लगता है, जीवा लड़खड़ाने लगती, पूरे बदन में कँपने शुरू हो गई, आँख और नाक से पानी टपकने लगता है| नशे में पूर्ण फँसा हुआ आदित्य पंद्रह रुपये का पत्ता खरीदने के लिए घर से छोटी मोटी चीजों की चोरी करता है| घर में स्थित भगवान गणेश जी की पीतल की मूर्ति, माँ बाप के रुपये, साथ ही साथ अपनी घड़ी और किताबों को भी बेच कर नशापान करता है| देखते ही देखते आदित्य कुछ माह में नशे का शिकार बन जाता है| वह घर के बाथरूम में भी नशा करने लगता है| घर तक नशा पान पहुँचने का नतीजा यह हो जाता है कि एक दिन पिताजी उसे नशा करते हुए पकड़ते हैं|

अरुण बाबू हेमंत बाबू से मनोरोग की बीमारी के संदर्भ में कहते हैं, “आप देखेंगे भाई साहब... कि आज की तारीख में सबसे अधिक मनोरोगी अमेरिका में है... और देखिए कि सबसे अधिक टूटे परिवार भी वहीं हैं...जानते हैं वहाँ इसे चुनावी मुद्दा तक बनाया जाता है| ईश्वर सबकुछ दे दे, दमा, हैजा...टी.बी. पर मानसिक रोग से बचाए रखे| बड़ा मुश्किल है, ऐसे रोगियों को सँभालना|” अत: इससे यह स्पष्ट होता है कि मनोरोग की बीमारी सबसे खतरनाक है|

नशा पान की स्थिति अमरिका से भी भयावह कलकत्ता महानगर में दिखाई देती है| कलकत्ता महानगर में करीब करीब तीस चालीस प्रतिशत युवा वर्ग ब्राउन शुगर, हेराँइन, गांजा जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं| कोलकत्ता के गली-गली में नशे की ये चीजें सस्ती कीमत में मिल जाती है| आधुनिक युग में नशे की चीजें गली-गली में मिलने के कारण काफी नवयुवक नशापान करते हैं| आज सबसे अधिक सरकार को आमदनी नशापान की चीजों से ही प्राप्त हो जाती है| इन चीजों को बेचने के लिए बड़े-बड़े माफिया मौजूद हैं| हिरों से लेकर जीरो तक सभी इसमें जुट चुके हैं| आदित्य मन में ठान लेता है कि दूसरों को बर्बाद नहीं करूँगा|

वैष्णव परिवार में पले आदित्य इस फुटपाथ की जिंदगी से हारकर आत्महत्या तक करने का विचार करता है| परंतु जिंदगी और मौत आदि के बीच जो संघर्ष करने वाले लोग हैं उन लोगों को देख कर उसके मन में जीने की तमन्ना निर्माण हो जाती हैं| अतः वह इस स्थिति में मोहनबाग लेन पहुँच जाता है|

आदित्य ने यह देखा कि अभावों के होते हुए भी लोग जीवन में हारना पसंद नहीं करते| वे जीवन में संघर्ष करते हैं और उसी में सफल होते हैं| जीवन से न हार कर मेहनत करने वाले कई लोग उन्होंने यहाँ देखे हैं| हाथ रिक्शा चलाने वाले, हाड़तोड़ मेहनत करने वाले, सहदेव,

कालिदास, हरिया, लालबहादुर, इतवारी आदि कई लोगों के साथ वह घुल-मिल कर रहता है| फुटपाथ पर अपनी गुजरान करने वाले ये लोग अब उनके साथी बन चुके हैं| इन लोगों के जीवन की छोटी-मोटी घटनाएँ आदित्य के जीवन को प्रेरणा देती है| अत: इससे वह प्रेरित होता है और अपना मार्ग चुनता है| इन लोगों के साथ रहकर भी आदित्य के मन में ऊँचे विचार आ जाते हैं और वह नशे पर काबू पाने का प्रयास करता है|

'पत्ता खोर' उपन्यास में लेखिका मधु कांकरिया ने आदित्य नामक एक नशेबाज युवक को चित्रित करके समाज के सामने एक नया आदर्श निर्माण किया है क्योंकि आदित्य नशे की लत से बाहर निकल कर एक अच्छा खासा आदमी बन जाता है| यह वह अपने कार्य से सिद्ध कर देता है और माँ-बाप की जो इच्छा, आकांक्षा अधूरी रह गई है उसे एक अच्छा आदमी बनकर पूर्ण करने का प्रयास करता है| जिसे देखकर माँ-बाप खुश हो जाते हैं| 'पत्ता खोर' उपन्यास का अंत लेखिका मधु कांकरिया ने उचित और समर्पक शब्दों में करके एक आदर्श लोगों के सामने रखने का प्रयास किया है| अतः लेखिका की यह एक खासियत है कि वह अलग-अलग विषयों को लेकर लेखन कर रही है, जिसमें वह सफलता भी प्राप्त कर चुकी है|

4) 'सेज पर संस्कृत' 'सेज पर संस्कृत' मधु कांकरिया का 2008 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित चौथा उपन्यास है| प्रस्तुत उपन्यास में बेधक, जुझारू, धैर्यवान और अंततः विद्रोही नारी की आंतरिक वेदनाओं और पीड़ाओं का विस्तृत चित्रण है| भारतीय संस्कृति में धार्मिक चिंतन और व्यवहार इन दोनों के बीच नारी का जीवन काफी कठोर और संघर्ष समय है| 'सेज पर संस्कृत' इस उपन्यास में इस यातनाओं का काफी गहराई से चित्रण मिल जाता है| प्रस्तुत उपन्यास में एक ऐसी आर्थिक समस्याओं में जकड़ी माँ का चित्रण है जो माँ अध्यात्म को मुक्ति का मार्ग मान कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है| साथ ही साथ अपनी बेटियों को भी इसी मार्ग पर वह ले जाना चाहती हैं| साध्वियों की जीवन स्थिति उनके संघर्ष को मार्मिक शब्द देने वाले इस उपन्यास में सामाजिक और आर्थिक विषमता, धार्मिक शोषण को गहराई से व्यक्त किया गया है|

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित परिवार का मुख्य पात्र पुत्र ऋषि की मृत्यु हो जाने के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ अकेली माँ पर आ जाती है| माँ अपनी दोनों बेटियाँ संघमित्रा और छुटकी को साथ लेकर रहती है| परिवार में पुरुष न होने के कारण समाज की मानसिक स्थिति का वह अनुभव लेती है| घर पर पुरुष न होने के कारण शिकारी कुत्तों की तरह लोगों की नजर उस घर पर रहती है| इसी बेचैनी के कारण वह माँ साध्वी बनने का रास्ता चुनना चाहती हैं|

साथ ही वह अपनी बेटियों को भी दीक्षा लेने के लिए प्रोत्साहित करती है| माँ अपनी दोनों बेटियों को शिखर जी ले जाती हैं क्योंकि वे वहाँ जाकर दुःख, दैन्य, दरिद्र और जीवन की वास्तविकता को अपनी आँखों से देखें| देखने के पश्चात वे स्वयं तय करें कि सांसारिकता से अलग हुए साधुओं और साध्वियों का जीवन कैसे आनंदी है| माँ अपनी बेटियों को दीक्षा दिलवा कर स्वयं की जिम्मेदारी से और सांसारिक बंधनों से भी मुक्त होना चाहती हैं| माँ स्वयं जो दुःख सहती है उसी को देख कर उसे ऐसा लगता है कि वह अपनी बेटियों को इस संसार के जाल में न फंसाएँ|

माँ घर में कोई पुरुष न होने के कारण और आर्थिक विषमता के कारण अपनी बेटियों को दीक्षा दिलवाना चाहती हैं| परंतु संघमित्रा दीक्षा लेने को विरोध करती है| वह दीक्षा का मार्ग ठीक नहीं है यह अपनी माँ को बार-बार बताने का प्रयास करती रहती है| संघमित्रा छुटकी की दीक्षा के आखिरी समय तक अपनी सहेली मालविका की मद्द से दीक्षा पाने के लिए विरोध करती रहती है| दीक्षा को रुकवाने के लिए संघमित्रा संघ के गुरुदेव तक पहुँचती हैं|

उपन्यास का एक बुजुर्ग पात्र गंगाबाई जो साठ साल की उम्र में 'संथारा व्रत' लेती है| इस व्रत के कारण वह अन्न-पानी तक त्याग देती है| गंगाबाई धर्म के अनुसार अपने शरीर को पीड़ा देकर मोक्ष तक पहुँचना चाहती है| इस घटना को देखकर संघमित्रा बहुत दुःखी हो जाती है| साधू और साध्वियों के दीक्षीत जीवन के इस रास्ते को देखकर संघमित्रा के मन में घृणा भरी है|

संघमित्रा माँ को अपने बारेमें फैसला सुनाती है, "पर हमें न पति चाहिए न घर| हमें बस थोड़ा-सा भरोसा दो जिससे हमारे पंखों को मजबूती मिल जाए, फिर हम अपना आसमान खुद ढूँढ लेंगे| औरत होने के डर से तुम खुद भी मुक्त हो जाओ और हमें भी मुक्त कर दो|" अतः इस बात से संघमित्रा अपनी मन की भावना माँ तक पहुँचाती है|

धार्मिक संस्कारों के बाद उसे साध्वी घोषित किया जाता है| उनका नया नाम 'साध्वी दिव्यप्रभा' रखा जाता है| नामकरण के पश्चात उनके बदन के सारे आभूषणों को उत्तार दिया जाता है और उनकी बोलियाँ लगाई जाती है| फिर केश-लुंनचन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है| इस दुःख, दर्द को वह छोटी छुटकी सहती रहती हैं| धार्मिक क्रिया पूर्ण होने के बाद छुटकी जोगिन में रूपांतरित हो जाती है| अब उन्हें धर्म के अनुसार रहना पड़ता है

'विजिटेरियन कांग्रेस' नामक सम्मेलन के बीच विजयेंद्र मुनि और दिव्यप्रभा एक दूसरे के ओर आकर्षित हो जाते हैं| विजयेंद्र मुनि दिव्यप्रभा की ओर देखकर कहता है, "नहीं जानता देवी कि मोक्ष सत्य है या नहीं, पर तुम सत्य हो| तुम्हारा सौंदर्य, उद्याम यौवन का यह आवेग, कामनाओं के ये फूल, यह परस्परता, ऊर्जस्वित करता यह मिलन...यही सत्य है जिसने एक

झटके में संन्यास और इंद्रिय निग्रह के झूठे साम्राज्य को ढहा दिया|" अतः उनका विचार है कि मानव जीवन में बिना स्त्री का जीवन आधा-अधूरा ही है| विजयेंद्र मुनि और साध्वी दिव्यप्रभा इस धार्मिक बंधनों को तोडकर गुरु भाई अभय मुनि की सहायता से बाहर निकलना चाहते हैं| अभय मुनि और रेणुश्री ये दोनों दिव्यप्रभा और विजयेंद्र मुनि को बाहर निकालते हैं| परंतु साध्वी दिव्यप्रभा अभय मुनि की वासना का शिकार बन जाती है| दिव्यप्रभा को पापी औरत साबित कर उसे संघ से निकाल दिया जाता है|

सामाजिक कार्य में जुटी संघमित्रा कंप्यूटर प्रोग्राम से सामाजिक कार्य करती रहती है| साथ हि साथ वह नारी शक्ति संघ को अधिक प्रभावी बनाती है|
छुटकी की बीमारी के कारण डॉक्टरों से जाँच करती है और उसे पता चलता है कि उसे कैंसर हो चुका है| संघमित्रा छुटकी का इलाज करती रहती है| परंतु आखिर में उसी में उसकी मौत हो जाती है| संघमित्रा को पता चलता है कि अपनी बहन छुटकी को इस खाई में धकेलने वाला उसका प्रेमी अभय मुनि ही है| वह आग बबोल हो जाती है| वह अभय मुनि की खोज करके उसका प्रतिशोध लेना चाहती है| प्रतिशोध की अग्नि में तपी संघमित्रा अभय मुनि की खोज करती है और उसे अपने झूठे प्यार के जाल में फंसाती है| संघमित्रा अभय मुनि को गोचरी के लिए आमंत्रित कर देती है| वह आनंदी होकर वहाँ पहुँचता है, तो संघमित्रा उसी रात उसी को मार डालती है| स्वयं वह पुलिस थाने जाकर आत्मसमर्पण कर देती हैं| हत्या का मुकदमा दो सालों तक चलने के बाद उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी जाती है|

अतः लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में विजयेंद्र मुनि के द्वारा एक कर्तव्य दक्ष, सुसंस्कृत, शिक्षित व्यक्ति का चित्रण करने का प्रयास किया है| इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखिका मधु कांकरिया ने 'सेज पर संस्कृत' इस उपन्यास में जैन धर्म में साध्वियों की स्थिति और समाज की मानसिक स्थिति का चित्रण अंकित किया है| लेखिका मधु कांकरिया ने आज के इस मूल्यहीन वातावरण में भटकती हुई और दिशाहीन युवा पीढ़ी की स्थिति को चित्रित करने का प्रयास किया है| प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से मधु कांकरिया ने समाज में रुढ प्रथाओं पर आघात करने का प्रयास किया है| साथ ही साथ वह उन प्रथाओं को नकारने के लिए कुछ पात्रों के द्वारा प्रयास भी करती हुई नजर आती है| मधु कांकरिया का साहित्य लेखन पाठकों को सोचने के लिए बाध्य कर देता है और उनके सामने विचारों की एक नई दिशा छोड़ता है|

5) सूखते चिनार:- मधु कांकरिया सुखाते चिनार लेखिका मधु कांकरिया का सन् 2012 में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित उपन्यास है| सूखते चिनार उपन्यास में

लेखिका मधु कांकरिया ने स्वप्न और उडान को भरते हुए शुरू में ही लिखा है, 'मेरी जिंदगी भारत के राष्ट्रपति के नाम समर्पित रहेगी| मैं भारत और भारत के संविधान के प्रति समर्पित रहूँगा| उसी के लिए जीऊँगा... उसी के लिए मरूँगा... कि मैं अपना हित-- सबसे अंत में सोचूँगा|' मिलिट्री में भर्ती हुए संदीप ने यही शपथ देहरादून में इंडियन मिलिट्री एकेडमी के पासिंग -आउट परेड के अंत में दोस्तों के बीच टोपियाँ उछालने के बाद ली थी| लड़का जो पारंपरिकता को छोड़कर कुछ अलग करने की सोच रहा है| मैंने तय कर लिया है कि मुझे फौज में दाखिला लेना है|'

संदीप पापा को समझाता है, "पापा, मैं क्या करूँ, मुझे बिजनेस से विरक्ति है| मैं अच्छा बिजनेस मैन बन ही नहीं सकता| मेरी मानसिक बनावट वैसी है ही नहीं| हो भी नहीं सकती, मैं यह जानता हूँ| मैंने खूब सोचा है इस पर|"[26] संदीप को बिजनेस के बारे में नफरत इसलिए है कि उन्होंने अपने पापा और उनके साथियों को अपने जीवन में हजार से लाख और लाख से करोड़ तक पहुँचने की व्यर्थ दौड़ में भागते हुए देखा है| इसमें केवल दौड़ ही दौड़ है मानसिक और बौद्धिक संतोष का थ्रिल कहीं भी नजर नहीं आता और यह मैं सह नहीं सकता|

संदीप को अनुभव आ जाता है कि यहाँ के नियमों के खूँटों से बँधी यह दिनचर्या है| एक ड्रेस बदलने के लिए पाँच मिनट भी नहीं दिए जाते| वह यहाँ की कठोर दिनचर्या और साथ में जबरदस्त रैगिंग से घबरा जाता है| अब उसे घर के बाहर की परेशानियों के कारण घर की याद आती है| घर का खाना, बाबू जी के विचार सब कुछ उसे याद आता है| कई बार सीनियर थाली से चपातियाँ गायब कर देते हैं| उन्हें भरपेट खाना तक नहीं मिल जाता| थाली सजाकर उनके सामने रख दी जाती है, लेकिन सीनियर उसको हवा में उड़ाते हैं| इस तरह से रैगिंग की जाती है| एक रात कड़कती ठंड में उसे आदेश मिलता है- 'कपड़े उतार, जमीन पर लेटो, सिवाय अंडरवीयर के उसने सारे कपड़े उतार डाले| पीठ पर पत्थर से भरा बोरा लेकर रूटीन दौड़ लगाई| कई बार यह रैगिंग बड़ी इंटेलीजेंट टाइप की भी होती है| संदीप जाते समय पिताश्री उससे कहते हैं, 'वादा करो तुम अपने जूनियर्स की रैगिंग नहीं करोगे|' संदीप पिताजी की बात का विरोध करता है क्योंकि उन्होंने जो कुछ सहा है उसका वह अपने जूनियर्स से बदला लेना चाहता है| परंतु पापा उसे इस बात को न करने के लिए वचन माँगते हैं| संदीप उनसे स्नेह और गर्व भरी दृष्टि से अपने जूनियर्स की रैगिंग न करने का वचन देता है| पाँच साल बीत जाते हैं चिनार के सूखे पत्तों की तरह गुजर रहे हैं साल-दर-साल| मेजर से कर्नल बनकर गुंडगाँव से चंडीगढ़

पोस्टिंग हुई, लेकिन कुछ तार अभी भी जुड़े हैं रुबीना से| रूबीना ने पिछले आठ-नौ महीनों से संदीप के पत्रों का और फोन का जवाब नहीं दिया| संदीप परेशान है|

सूखते चिनार उपन्यास में संदीप नामक एक मारवाड़ी परिवार के नवयुवक की कथा है| जो अपनी परंपराओं को छोड़कर आर्मी में भर्ती हो जाता है| संदीप सैनीकी जीवन के तमाम त्रासदियों को सहता रहता है| मेजर संदीप, कर्नल आप्टे आदि के माध्यम से आतंकवाद, रैगिंग, भूखमरी, बेरोजगारी, बेकार, आधुनिकीकरण, हिंदू - मुस्लिम, विवाह, नौकरी, अंधविश्वास, शिक्षा, बढ़ती उम्र, आत्महत्या, शिक्षा और आर्मी जीवन आदि समस्याओं का विस्तृत चित्रण लेखिका मधु कांकरिया ने सूखते चिनार इस उपन्यास में किया हुआ दिखाई देता है| अतः उपन्यास पढ़ने में अधिक रोचक है|

6) 'हम यहाँ थे'- प्रस्तुत उपन्यास मधु कांकरिया द्वारा लिखित छटा उपन्यास है | प्रस्तुत उपन्यास को पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में बांटा गया है| जिसमें- 'क्योंकि तुम कर्म नहीं हो!', 'दीपशिखा की डायरी: अपने-अपने जंगल', 'धर्म और शर्मा', 'मेरे घर आई जिंदगी!','न जाने नक्षत्रों से कौन, निमंत्रण देता मुझको मौन', 'ओ जिंदगी! ओ प्राण! और उत्तरार्ध में- 'प्रेम और पहाड़', 'इस गांव में अभी एक औरत बची हुई है!' और आखिर में 'सुनी सुनाई' आदि को लेकर उपन्यास को मधु कांकरिया ने चित्रित किया है| उपन्यास की शुरुआत ही जंगल कुमार द्वारा दीपशिखा को लिखी हुई चिट्ठी से होती है| दीपशिखा को लगता है कि उसकी जिंदगी में कुछ भी सच नहीं है, सब हवा-हवाई किस्सा है या स्वप्न है| दीपशिखा दिनभर घुमक्कड़ी करती रहती है और निरूद्देश्य निर्देश देती हुई वह भटकती रहती है| पर बस एक ही पागलपन सवार रहता है कि वह लोगों के घरों में झांकने का प्रयास करती रहती है| घर चाहे सड़क पर हो या बदनुमा, मैली धुंधली बस्तियाँ हो, या फिर कोलकाता के अलीपुर, कैमक स्ट्रीट जैसे रईस इलाके की गगनचुंबी इमारतें क्यों ना हो| इंसानी दु:ख-दर्द, सुख-स्वप्न, उम्मीद-नाउम्मीद की जिंदा फड़फड़ाती कहानियाँ हर जगह बिक्री हुई मिलती ही है|

दीपशिखा की शादी टूटने के कारण माँ परेशान है| माँ उसे नौकरी भी नहीं करने देती| दीपशिखा की शादी न होने के कारण वहां उन्हें मानिकतल्ला स्थित जैन मंदिर के पुजारी के सुझाव पर जंतर बनवाती है, जिससे उसकी समस्या हल हो जाए ऐसा उसे लगता है|

दीपशिखा की शादी हो इसलिए माँ कई पुजारी महंतों से जंतर-मंतर करवाती रहती है| परिवार के बड़े प्रयासों के बाद दीपशिखा की शादी राजीव से हो जाती है| राजीव और दीपशिखा का वैवाहिक जीवन अधिक समय तक नहीं टिक सका| उसे सोनू नामक एक छोटा सा बचा है,

जिसे लेकर वह अपने मायके माँ-बाप के पास आ जाती है| माँ और दीपशिखा के बीच में किसी न किसी कारण छोटा-बड़ा संघर्ष घर में होता ही रहता है| दीपशिखा को भाई बार-बार समझाने का प्रयास करता है| माँ अंधविश्वास में लिप्त होने के कारण वह दीपशिखा पर कई अंधविश्वास के प्रयोग करती रहती हैं, ताकि उसका परिवार बस जाएं| दीपशिखा के कारण परिवार का वातावरण बिगड़ जाता है|

सोनू माँ और पिताजी के बीच में होने वाले झगड़े को लेकर कहता है, 'पापा बाहर नहीं यही हैं, बहुत झगड़ा करते हैं मम्मा के साथ...मम्मा अब पापा के पास नहीं जाएगी|' इस बात को सुनकर रिश्तेदार ताई जी ने कहा 'ऊंच-नीच किस घर में नहीं होती, पर ऐसे घर थोड़े ही छोड़ा जाता है|' दीपशिखा को कोलकाता के सबसे बड़े टी एक्सपोर्ट हाउस 'ए तोष एंड संस' में बतौर कंप्यूटर प्रोग्रामर की नौकरी मिल जाती है| पद्रह सौ रुपए महीने का पगार था| अब वह बेहद खुश हो गई साढे तीन सौ से सीधे पद्रह सौ! इस छोटी सी सफलता ने दीपशिखा को आत्म गौरव के शिखर पर चढ़ा दिया|

दीपशिखा इन आदिवासियों के बीच में शोध कार्य करने के लिए आई है| जंगल कुमार उन्हें यहाँ के 'सुंदर वन की शेरनी' कहता है| जंगल कुमार के मन में यह विचार आता है कि, "या तो मैं उसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार करूं या उसके साथ और आगे नहीं बढ़ूं| मेरे लिए दूसरा रास्ता ही बचा था क्योंकि आदिवासियों का विश्वास मेरे सारे जीवन की कमाई थी जिस पर हलकी सी आंच भी नहीं आने देना चाहता था मैं|"[47] इस तरह से सत्य और ख्वाब के बीच में जंगल कुमार कई माह गुजर चूका है| छह महीने के बाद झारखंड में विद्रोह की चिंगारी फैल गई| मलेरिया प्रतिरोध अभियान, किसान संघर्ष समिति, महिला विकास सहयोग समिति, आदिम जनजाति विकास समिति, जल प्रबंधन अभियान, क्षेत्रीय कारीगर पंचायत अभियान, बिशुनपुर नगर विकास अभियान, अंधविश्वास उन्मूलन अभियान आदि कई आंदोलन जारी हो गए| इस आंदोलन में हिस्सा लेने वाले कई सदस्यों, कार्यकर्ताओं को पुलिस द्वारा पकड़ने की प्रक्रिया शुरू हो गई| 'वेंकटेश ग्रुप कंपनी' द्वारा गैर कानूनी भूमि अधिग्रहण करने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी जिसे सरकार सहायता कर रही थी|

उपन्यास के आखिर में लेखिका ने कुछ सुनी-सुनाई बातों का जिक्र किया है, जिसमें वह कहती है कि प्लांट मैनेजर वेंकटेश ग्रुप के मालिक के इकलौते पुत्र मिस्टर विरेंद्र मर्सिडीज गाड़ी में बैठ रहे थे तब काली नागिन उन्हें काटती हैं जिसमें उनकी मृत्यु हो जाती है| इस घटना के बाद वहाँ कई अंधविश्वास की कहानियाँ गूंजती रही जिसमें कहा जाता कि फुलवा नागिन बनकर

उसने ही उसे काटा है| फुलवा को भले ही अदालत में न्याय नहीं मिला लेकिन उन्होंने इस क्रिया से जरूर अपना न्याय हासिल किया है| बदले की भावना को लेकर कई अंधविश्वास की किवदंतियाँ अलग-अलग तरह से लोग अब कहते रहते हैं| जंगल कुमार दीप शिखा के बारे में ही सोचता रहता है| उसके कार्य के लिए वो खुद को ही जिम्मेदार मानता रहता है और सब कुछ खत्म हुआ है ऐसा मानता है लेकिन उसे दीपशिखा की कुछ बातें याद आती है वह कहती थी, 'सब खत्म नहीं हुआ वक्त बदल रहा है अब चलो छोड़ दो आगे बढ़ो.....|

'हम यहाँ थे' प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका मधु कांकरिया ने दीपशिखा और जंगल कुमार के प्यार को लेकर यह कहानी स्पष्ट की है| जिसमें आदिवासी, भूखे, पीड़ित लोगों के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाली दीपशिखा और जंगल कुमार के द्वारा आज के नवयुवक और नवयुवतियों को समाज के लिए कुछ करने का संदेश दिया है| लेखिका ने अपनी कई कृतियों के माध्यम से समाज में फैली ऊंच-नीच की जड़ों पर प्रहार करने का प्रयास किया है| लेखिका भेदभाव माननें वाले लोगों की मानसिकता पर आघात करती है|

लेखिका पाठकों को सोचने पर मजबुर करती है कि, अपनी रूचि के अनुसार हर व्यक्ति को आगे बढने का मौका मिलना चाहिए| हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा है| हिंदी साहित्य उदयकाल से ही समाजोन्मुख तथा मानवतावादी प्रवृत्तियों से समृद्ध रहा है| भारतीय जीवन की सभी आयामों और समस्याओं का चित्रण पूर्ण यथार्थ के साथ हिंदी साहित्य में प्राप्त होता है| इक्कीसवी सदी की लेखिका मधु काँकरिया ने भी अपने साहित्य के माध्यम से इसी परंपरा को आगे बढ़ाया है| मधु जी के साहित्य में वर्तमान प्रश्नों की चिंता का विषय प्रमुख रूप से रहा है|

मधु काँकरिया ने साहित्य के माध्यम से सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गाया है| हिंदी साहित्य में नारी विमर्श पर लिखने वालों की लंबी सूची मिलती है| जिन्होंने नारी जीवन के विविध रूपों का चिंतन किया है| मधु काँकरिया जी ने अपने उपन्यासों में नारी विमर्श के साथ-साथ नारी समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है| मधु जी के स्त्री पात्र अपनी समस्याओं और परिस्थितियों में अपने तरीके से संघर्ष करते हैं| मणि का संघर्ष अविवाहित रहना, सुकीर्ति का वेश्याओं के लिए काम करना, नाबालिक लड़कियों को वेश्या बनने से बचाना, संघमित्रा का संघर्ष कर्मकांडों की सच्चाइयों को लोगों के सामने लाना, पुष्पा भाभी का मुसलमान बच्चे का पालन-पोषण करना ये सारी बातें, घटनाएँ नारी विमर्श को व्यक्त करती है| लेखिका ने नारी जीवन के सामाजिक सरोकारों से जुड़कर उनके जीवन के प्रश्नों को लेकर काफी गहराई से साहित्य लिखा है| नारी जीवन की समस्याओं का केंद्र मानो उनका उद्देश्य ही हो| नारी जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत चरण में देखना है|

मधु काँकरिया ने अपने साहित्य में नारी को केंद्र में रखकर उनके नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है| जिनमें परित्यक्ता, विधवा, वेश्या, विवाह, बलात्कार, भ्रूणहत्या आदि समस्याओं का चित्रण किया है| नारी सामाजिक समस्याओं का अंकन यथार्थ की धरती पर करने वाली लेखिका मधु काँकरिया ने इक्कीसवीं सदी की लेखिका के रूप में अपना अलग महत्व स्थापित किया है| नारी जीवन, संवेदनात्मक सभी आयामों को उनकी कहानियों में स्थान प्राप्त तो हो चुका है| लेखिका मधु काँकरिया ने नारी प्रश्नों को अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर किया है| मानो यह सभी समस्याएँ वर्तमान जीवन की प्रासंगिकता को स्पष्ट करती हुई नजर आती हैं|

मधु जी ने रिश्तों की गहराई तक जाकर उसकी पड़ताल करते हुए शोषण की समस्याओं पर चिंतन किया है| मानवी संबंधों में रिश्तों का महत्वपूर्ण स्थान होता है| प्रत्येक रिश्ता कुछ देता है, तो कुछ छीन भी लेता है, वह रिश्ता फिर पति-पत्नी का हो, या पिता-पुत्री का पुत्र का, भाई-बहन या परिवार के अतिरिक्त पड़ोसियों का हो| प्रय: सभी रिश्तों में घुटन और छल के कारण रिश्तों का शोषण होता नजर आता है| मधु जी ने कुछ स्त्री और पुरुष पात्रों के माध्यम से रिश्तों के शोषण की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है|

भारतीय परिवारों में लंबे समय तक लड़कियों के विवाह का प्रश्न अनसुलझा रहने के कारण है, धन की कमी अपितु अनेक बार प्रेमी से धोखा खाने पर, लड़कियों को प्रेम विवाह का विरोध होने पर, परिवार के सदस्यों का उधर निर्वाह करने हेतु या नौकरी करते हुए लड़कियों का समय यो ही व्यतीत हो जाता है| इस कारण वे अपने विवाह के बारे में सोच भी नहीं पाती| जब विवाह की इच्छा इनमें जागृत होती है, तब बहुत विलंब हो गया होता है| वे इस समय परिपक्व हो जाती है| अत: इन लड़कियों का विवाह नहीं हो पाता| ऐसी ही अनेक अविवाहित लड़कियाँ एकाकी जीवन यापन करने के लिए विवश होती है| भारतीय समाज में अविवाहित नारी की स्थिति दयनीय होती हैं| इस प्रकार मानवीय संबंधों के रिश्तों के शोषण पर लेखिका ने प्रकाश डालते हुए रिश्तों के शोषण की कई समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने किया है, जो सार्थ दिखाई देता है|

इक्कीसवीं सदी के महिला साहित्यकारों की सूची में मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा आदि के साथ जुड़ने वाला एक विशेष उल्लेखनीय नाम है मधु काँकरिया का| जिन्होंने बदलते संदर्भ में स्त्री विमर्श के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों को भी अपने साहित्य में स्थान देकर , वे अपना अलग महत्त्व रखती है | समाज का यथार्थ चित्रण इनकी विशेषताएँ हैं|

मधु काँकरिया ने अब तक छह उपन्यास लिखे हैं| उनका पहला उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' में नक्सलवादी आंदोलन के दहला देने वाले विवरण प्रस्तुत करती है , जो इतिहास में सामान्यत: लिखे नहीं जाते | साथ ही कलकत्ता के एक मध्यवर्गीय परिवार की दमघोटू समस्याओं का विवरण भी इसमें किया गया है|

दूसरा उपन्यास 'सलाम आख़िरी' वेश्या और वैश्यावृत्ति के पुरे परिदृश्य को व्यक्त करता है| नक्सलवाद और वैश्यावृत्ति के बाद नशाखोरी जैसी समस्या पर अपना तीसरा उपन्यास लिखकर मधु जी ने यह सिद्ध किया है , कि वे सामाजिक समस्याओं और बुराइयों को अपने लेखन की बुनियादी शर्त मानती है| यह मधु जी के साहित्य की विशेषताएँ हैं|

युवाओं में बढती नशे और ड्रग्स की लत को आधार बनाकर मधु जी ने यह बताया है कि नशे के लिए न केवल व्यक्ति जिम्मेदार है , बल्कि नशे के व्यापारी भी | इस उपन्यास के ताने बाने में कलकत्ता में फैले बिखरे नशाखोरी, ठेकों, नशाखोरी छुड़ाने में लगी संस्थाओं और तमाम अभागे माता-पिता के दु:स्वप्नों की मार्मिक दुनिया का वर्णन है| इनके उपन्यास तमाम नशाखोरी के लिए प्रेरणा और उम्मीद से भरा एक आख्यान बन गया है| जिसमें गुजरना आधुनिक युग का युवा वर्ग, परिवार और समाज के मनोजगत की अतल गहराइयों में उतरना है|

मधु जी का चौथा चर्चित उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' साध्वी जीवन की गाथा है | प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने जैन धर्म में आए आडंबरों का अंकन किया है | महावीर के जैन धर्म की विवेचना करते हुए उसमें आए आडंबरों पर कटाक्ष किया है | लेखिका धर्म साधना से श्रम साधना को अधिक महत्त्व देती है | क्योंकि श्रम साधना अधिक जिवंत और श्रेष्ठ होती है | नारी विरोधी धर्म सत्ता की व्याख्या प्रस्तुत उपन्यास में की है| यह मधु जी के साहित्य की विशेषताएँ हैं|

सामाजिक सरोकारों से जुड़े बिना कोई भी लेखन समृद्ध नहीं हो सकता | कोई भी लेखन अपनी पूर्णता तक या सार्थकता तक नहीं पहुँच सकता| जब तक पाठकों का समाधान नहीं होता, तब तक पाठक उस साहित्य को पढने में रूचि नहीं लेता | इस कसौटी पर मधु काँकरिया खरी उतरती है| यह मधु काँकरिया के साहित्य की विशेषताएँ हैं| उन्होंने साहित्य समाज में हिट होने के लिए नहीं लिखा, बल्कि अपने समय के सामाजिक प्रश्नों का अनुभव और संवेदना को पूर्णता देने के लिए साहित्य लिखा है| चाहे क्षेत्र नक्सलवाद का हो, सोनागाछी का या फिर जैन धर्म की सामाजिक अप्रासंगिकता का होया युवाओं में बढती नशाखोरी का हो| इन सभी क्षेत्रों का अध्ययन और चिंतन करके ही लिखा हैं| साथ ही अपने चिंतनों के आधार इन समस्याओं का करुण गाण

गाते-गाते, उसपर समाधान की खोज भी लेखिका करती है | यह मधु काँकरिया के साहित्य की विशेषताएँ देखने को मिलती हैं|

लेखिका को उनके समय की ज्वलंत समस्याओं ने काफी चिंतीत किया | नक्सली, नशापान, बेरोजगारी, गरीबी, अनमेल विवाह, प्रेम, भ्रष्टाचार आदि सामाजिक समस्याओं ने उन्हें काफी चिंतीत किया| साथ ही साथ मधु जी ने नारी जीवन की समस्याओं में वेश्या, परित्याक्ता, विधवा विवाह, भ्रूणहत्या, बलात्कार, नारी शोषण, रैगिंग जैसी समस्याओं का अंकन भी किया है| साथ ही आदिवासी जीवन की यातनामय समस्याओं का चित्रण अपने साहित्य में किया है| ओम निश्चल के अनुसार "मधु काँकरिया प्रश्नों, समस्याओं से घिरी एक ऐसी स्त्री का नाम है, जिसने साधारण स्त्री का जीवन वरन् न कर अपने को जीवन के दबे कुचले तबको के नागरिकों और वंचितों के वृत्तांत के लिए समर्पित कर दिया है |" अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक समस्याओं के जागर के साथ-साथ समस्याओं के समाधान के लिए लेखिका ने प्रस्तुत समस्याओं को मिटाने के उपायों को भी स्पष्ट किया है | प्रस्तुत अध्याय के चरण में इसका चित्रण किया गया है|

मनुष्य सामाजिक प्राणी है| वह समाज में रहता है| अतः हर एक समाज के सम्मुख सदा कुछ न कुछ समस्याएँ रहती हैं| सामाजिक समस्या से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक परिस्थिति से है जो एक समाज में काफी संख्या में योग्य अवलोकनकर्ताओं के ध्यान को आकर्षित करती हैं | सामाजिक अर्थात सामूहिक किसी एक अथवा दूसरे किस्म की क्रिया के द्वारा पुनः सामंजस्य या हल के लिए उन्हें आगाह करती हैं।

भारत में व्याप्त वेश्यावृत्ति , नशा, आतंकवाद, नक्सलवाद, बेरोजगारी, निर्धनता, धर्म आदि समस्याओं के कुछ उदाहरण है - वेश्या वह स्त्री है जो बिना किसी पसंद के पैसों के लिए अपने शरीर को नि संकोच कई पुरुषों को समर्पित करती है| एक व्यवसाय के रूप में वेश्यावृत्ति का प्रचलन संपूर्ण विश्व में प्राचीन काल से हो रहा है| इसीलिए विश्व का प्राचीनतम पेशा कहा गया है| आज समाज में इस पेशे को सामाजिक, नैतिक आधारों पर कलंकित समझ कर निंदा की जाती है| किंतु हर सभ्य समाज में यह समस्या प्राचीन काल से ही विद्यमान है | नैतिक व्यापार में लगी स्त्रियों को इस दिशा में धकेलकर ले जाने वाली कोई न कोई प्रेरणा अवश्य होती है| यह प्रेरणा अंतरिक भी हो सकती हैं और परिस्थितिजन्य भी हो सकती हैं|

मधु काँकरिया कृत 'सलाम आखिरी', 'सेज पर संस्कृत' उपन्यासों में वेश्या और उनके नारकीय जीवन को दर्शाया गया है | 'सलाम आखरी' उपन्यास कि अधिकतर लड़कियाँ विश्वासघात, यौन-शोषण और निर्धनता का शिकार होकर ही इस व्यवसाय को अपनाती है | विवश माँ, बाप, पति या प्रेमी धोखे से इस नारकी य दुनिया में स्त्रियों को बेच देते हैं | फिर ग्राहक पैसे के बल पर इनका तरह-तरह से शोषण करते हैं|

आज संबंधों की किसी भी छत के नीचे स्त्री देह सुरक्षित नहीं है | बूढी से लेकर बच्ची तक यही स्थिति है। वह हर जगह हिंसा और यौन शोषण का शिकार होती है | वह तो बाहर राह चलते, स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, बस, ट्रेन आदि में हिंसा और शोषण का शिकार होती रही है| बड़ी लड़कियों की अपेक्षा छोटी लड़कियों के साथ हिंसा की ज्यादा घटनाएँ घटित होती है| घर में ही कुछ लड़कियाँ पिता द्वारा यौन शोषण का शिकार भी हो रही है| कारण यह है कि पिता पुत्री को भी पत्नी की तरह अपनी संपत्ति मानता है | वह जैसा मन चाहे उसके साथ वैसा दुर्व्यवहार करता है| 'सूखते चिनार', 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय है |

मधु काँकरिया के साहित्य में वेश्या समस्या का चित्रण अधिक दिखाई देता हैं| उनके साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि, जब तक वेश्याओं कि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के सामाजिक और आर्थिक असंतुलन में उपजे शोषण का शिकार होने से बचाया नहीं जाएगा तब तक नैतिक और भावनात्मक सुरक्षा , प्रेम और स्वस्थ्य वातावरण नहीं दिया जाएगा | समाज की दोहरी नैतिकताओं को नहीं बदला जाएगा तब तक वेश्यावृत्ति की अंधेरी अंतर हिन गुफा में औरत दम तोड़ती रहेगी | जब तक व्यभिचारी और वेश्यागामी पुरुष ग्राहक को कानून की दृष्टि में अपराधी और समाज की दृष्टि में घृणित, अधम और नीच नहीं समझ जाएगा तब तक वेश्यावृत्ति संबंधी दुनिया के सारे कानून व्यर्थ सिद्ध होंगे|

'पत्ता खोर' उपन्यास का अध्यन करने के उपरांत य ह निष्कर्ष स्थापित किया गया कि नशा केवल व्यक्ति के लिए नहीं वरन् उनके परिवार और व्यापक रूप से समाज के लिए भी हानिकारक होता है| मादक द्रव्य, व्यसन करनेवाले नारों की वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति में मदिरा पीने या अन्य मादक पदार्थों के नियमित रूप से सेवन करते रहने की इच्छा प्रबल रहती है| इच्छा प्रबल होने पर वह उसे किसी भी तरह पाना चाहता है | द्रव्य का आदी होना या नियमीत सेवन करना सूचित करता है | निर्भरता शारीरिक भी हो सकती है और मानसिक भी | शारीरिक निर्भरता द्रव्य के बंद कर देने से व्यक्ति दर्द , पीड़ा, उलझन, व्यथा एवं बीमारी का सामना करता है| 'पत्ता खोर' उपन्यास का पात्र आदित्य को जब नशा समय पर उपलब्ध नहीं

होता तो उन्हें शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है | मधु काँकरिया के साहित्य में मादक द्रव्य व्य सन के कई कारण दृष्टिगोचर होते हैं , जैसे संगति का प्रभाव , वैयक्तिक कारण, निराशापूर्ण जीवन, माँ का दुर्व्यवहार, प्रेम में असफलता आदि नजर आते हैं|

मादक द्रव्य व्यसन के कुप्रभाव व्यक्ति, परिवार समुदाय और समाज पर व्यापक रूप से पडते हैं| मानव जीवन का शायद ही कोई पहलू है जो इस व्यसन से कम या अधिक मात्रा में प्रभावित नहीं होता है | अधिकांश मादक द्रव्य पदार्थ शरीर के विभिन्न अवयवों और प्रणालियों जैसे नाड़ी संस्थान, मस्तिष्क, हृदय, गुदै, श्वास-प्रणाली, फेफड़े आदि पर घातक प्रभाव डालते है| जहरीले मादक पदार्थों से कई लोगों की मृत्यु हो जाती है | मादक पदार्थों के अत्यधिक सेवन से शरीर कमजोर पड जाता है और जीवन आयु भी कम हो जाती है | 'पत्ता खोर' उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय माना जाता है|

'सूखते चिनार' उपन्यास में आतंकवाद की समस्या का चित्रण हुआ है | इनका अध्ययन करने के उपरांत य ह निष्कर्ष स्थापित किया गया है कि आतंकवाद वर्तमान विश्व की एक गंभीरतम् समस्या है| आतंकवादी प्रवृतियाँ इतनी तेजी से उभर रही है कि वर्तमान युग को आतंकवादी युग कहा जा सकता है| आज यह न राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय समस्या बन गई है, जो न सिर्फ राष्ट्रीय किंतु अंत रराष्ट्रीय राजनीति को भी अस्थिर कर देती हैं | वास्तव में आतंकवाद का जन्म और संतोष धर्मांधता , आर्थिक विषमता , रंगभेद, भाषाई, विभेद क्षेत्रावाद आदि के प्रति विद्रोह की भावना तथा अनुशासन हीनता से हिंसात्मक अभिव्यक्ति है| व्यावहारिक रूप से आज आतंकवाद राजनीतिक स्वार्थों की सिद्धि के लिए कोई साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है| समस्त विश्व आतंकवाद के शिकंजे में उलझता जा रहा है|

भारत की आतंकवाद की समस्या दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है| फलस्वरूप देश की एकता और अखंडता को खतरा उत्पन्न हो गया है | आज आतंकवाद का शिकार सरकारी तंत्र तो हो| आम जन भी बुरी तरह से त्रस्त है और इसे एक आपदा के रूप में देख रहा है | आतंकवादी गतिविधियों में नासमझ बच्चों, स्त्रियों और नवयुवकों की भी सक्रिय भूमिका रही है| 'सूखते चिनार' उपन्यास में आतंकवाद में स्त्रियों की भूमिका का चित्रण हुआ है | आतंकवादी गतिविधियों में स्त्रियों का सहारा इसलिए लिया जाता है क्योंकि कोई भी उनको संदेह पूर्वक दृष्टि से नहीं देखता है|

खुले गगन के लाल सितारे उपन्यास लेकिन कॉमरेड , महाबली का पतन, बीतते हुए नंदीग्राम के चुहे , बड़ा पोस्टर आदि कहानियों का अध्ययन विश्लेषण करने के उपरांत यह

निष्कर्ष स्थापित किया गया कि नक्सलवाद एक विचारात्मक राजनीतिक व आर्थिक संघर्ष है जो वर्तमान शासक वर्ग की राजसत्ता को उखाड़ फेंकना चाहता है ऐसे शासक वर्ग की राजसत्ता को जिसके मालिक देशी विदेशी पूंजीपति भू -स्वामी, ठेकेदार, दलाल, नौकर, नौकर-शाह है तथा जो बहुसंख्यक श्रमजीवी वर्ग प्रशासन करते हैं | नक्सलवाद के विस्तार का प्रमुख कारण यह है कि हमारी विकास योजनाएं कागजों पर जितनी अच्छी रही है उतनी ही कमी उनके क्रियान्वयन में भी देखी गई है नक्सलवाद की असल जड़ गरीबी बेरोजगारी भुखमरी और बदहाली है | जिन इलाकों में भूख और गरीबी से त्रस्त लोगों की संख्या जितनी ज्यादा है वहां नक्सलवाद फैलाने की आशंका उतनी ही अधिक होती है | अराजकतावादी तत्व बेरोजगार युवकों को गुमराह करके मनचाही हिस्सा एवं आतंक की ओर प्रेरित करते हैं दूसरे शब्दों में नक्सलवाद आज इस कारण जिंदा है क्योंकि हमारे समाज में असंतोष व विक्षोप के कारण बने हुए हैं| जब तक भूख उत्पीड़न दबाव दहशत पीड़ा एवं वंचित आबादी रहेगी तब तक असंतोष और अराजकता ऐसे आंदोलनों को जन्म देती रहेगी नक्सलवाद आज जिस मोड़ पर पहुंच चुका है इसे स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन चुका है नि संदेह यह शांति विकास और कानून व्यवस्था के लिए बड़ी बाधा बनता जा रहा है वास्तव में नक्सलवाद घोर एवं घातक हिंसक कार्यवाहियों का पर्याय बन कर एक गंभीर सुरक्षा चुनौती के रूप में उभरा है|

'सेज पर संस्कृत', 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास का अध्ययन विश्लेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष से स्थापित किया गया है कि प्राचीन काल से ही धर्म भारतीय समाज का प्रमुख अंग रहा है भारत के अन्य प्राचीन धर्मों में से जैन धर्म मौलिक और स्वतंत्र धर्मा ज्ञात होता है और यह दर्शन जीवन के दृष्टिकोण आचार के नैतिक नियमों संघ और संगठन में बिल्कुल भिन्न है भारत में जितने भी धार्मिक संप्रदाय विकसित हुए उनमें से अहिंसावाद को इतना महत्व किसी ने भी नहीं दिया जितना जैन धर्म ने दिया है स्वयं हिंसा करना दूसरों से हिंसा करवाना या अन्य किसी भी तरह से हिंसा में योग देना जैन धर्म में सब को मनाई है और विशेषता यह है कि जैन दर्शन केवल शारीरिक अहिंसा तक ही सीमित नहीं है , प्रत्युत बौद्धिक अहिंसा को भी अनिवार्य बताता है|

जैन धर्म को उसके अनुयायियों ने बस कीड़े मकड़ों को ही समर्पित कर रखा है| उन्हीं के लिए उनके मन में दया है मधु काँकरिया ने अपने साहित्य में जैन धर्म की वेट न करते हुए उनमें आये आडंबरों पर कटाक्ष किया है ।

पत्ताखोर, सूखते चिनार , खुले गगन के लाल सितारे , सेज पर संस्कृत उपन्यास का अध्ययन करने के उपरांत ये निष्कर्ष से स्थापित किया गया है कि अर्थ हमारे जीवन को अधिक प्रभावित कर रहा है जीवन की बहुत सी समस्याओं सत्ता प्राप्ति की होड़ प्रतिस्पर्धा महंगाई से जूझते व्यक्ति का संघर्ष , निर्धनता से पिस्ता व्यक्ति रिश्वतखोरी , भ्रष्टाचार , कालाबाजारी मुनाफाखोरी, घोटाले, मानवीय मूल्यों का रास, नैतिकता में आए परिवर्तन आदि के मूल में अर्थ ही है सामान्यतया व्यक्ति का जीवन अर्थ के जाल में जकड़ा हुआ है|

शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी युवाओं को नौकरी नहीं मिल रही जिसके कारण उनमें आक्रोश तथा गहरी निराशा व्याप्त है बेरोजगारी के कारण ही व्यक्ति को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है यहां तक आत्महत्या करने का भी विचार उसके मन में आने लगता है|

सूखते चिनार, खुले गगन के लाल सितारे , सलाम आखिरी उपन्यास का अध्ययन करने के उपरांत यह निष्कर्ष स्थापित किया गया है कि पति-पत्नी संबंधों की प्रत्येक युग में अपनी अपनी मान्यता रही है एक समय था जब पत्नी अपने पति को देवता मानकर उसकी पूजा करती थी उसकी सत्ता और अधिकारों को स्वीकार करती थी किंतु आज स्थापित मान्यताओं एवं संबंधों के पुनर्मूल्यांकन तथा नारी की आर्थिक स्वतंत्रता ने पति की सर्वाधिकारी एवं सर्वोच्च सत्ता पर प्रश्न चिन्ह अंकित कर दिया है | आधुनिक समाज में पति -पत्नी संबंधों का एक और नया रूप विकसित हुआ है जिसमें पति की विचित्र स्थिति देखने को मिलती हैं | एक और वह चाहता है कि उसकी पत्नी आधुनिक हो किंतु दूसरी ओर वह अपनी सत्ता भी उस पर थोपना चाहता है| पति पत्नी संबंधों का स्वरूप यहां तक पहुंच चुका है कि पति स्वार्थ के लिए स्वयं अपनी पत्नी का प्रयोग करता है| पति पत्नी के संबंधों की आधारशिला तो पारस्परिक विश्वास है | पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति और विश्वास व संदेह दांपत्य जीवन में विश्व घोलकर दरार उत्पन्न कर देता है जिससे तनाव की स्थिति पैदा होती है जो विघटन का कारण बनते इन सभी बातों का चित्रण लेखिका ने अपने साहित्य के अन्तर्गत किया है|

'हम यहाँ थे' प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका मधु काँकरिया ने दीपशिखा और जंगल कुमार के प्यार को लेकर यह कहानी स्पष्ट की है | जिसमें आदिवासी, भूखे, पीड़ित लोगों के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाली दीपशिखा और जंगल कुमार के द्वारा आज के नवयुवक और नवयुवतियों को समाज के लिए कुछ करने का संदेश दिया है| लेखिका ने अपनी कई कृतियों के माध्यम से समाज में फैली ऊंच-नीच की जड़ों पर प्रहार करने का प्रयास किया है| लेखिका भेदभाव माननें वाले लोगों की मानसिकता पर आघात करती है|

मधु कॉंकरिया के साहित्य में वेश्या समस्या का चित्रण अधिक दिखाई देता हैं| उनके साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि, जब तक वेश्याओं कि पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के सामाजिक और आर्थिक असंतुलन में उपजे शोषण का शिकार होने से बचाया नहीं जाएगा तब तक नैतिक और भावनात्मक सुरक्षा, प्रेम और स्वस्थ्य वातावरण नहीं दिया जाएगा| समाज की दोहरी नैतिकताओं को नहीं बदला जाएगा तब तक वेश्यावृत्ति की अंधेरी अंतर हिन गुफा में औरत दम तोड़ती रहेगी| जब तक व्यभिचारी और वेश्यागामी पुरुष ग्राहक को कानून की दृष्टि में अपराधी और समाज की दृष्टि में घृणित, अधम और नीच नहीं समझ जाएगा तब तक वेश्यावृत्ति संबंधी दुनिया के सारे कानून व्यर्थ सिद्ध होंगे|

आज संबंधों की किसी भी छत के नीचे स्त्री देह सुरक्षित नहीं है| बूढी से लेकर बच्ची तक यही स्थिति है। वह हर जगह हिंसा और यौन शोषण का शिकार होती है| वह तो बाहर राह चलते, स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, बस, ट्रेन आदि में हिंसा और शोषण का शिकार होती रही है| बड़ी लड़कियों की अपेक्षा छोटी लड़कियों के साथ हिंसा की ज्यादा घटनाएँ घटित होती है| घर में ही कुछ लड़कियाँ पिता द्वारा यौन शोषण का शिकार भी हो रही है| कारण यह है कि पिता पुत्री को भी पत्नी की तरह अपनी संपत्ति मानता है| वह जैसा मन चाहे उसके साथ वैसा दुर्व्यवहार करता है| 'सूखते चिनार', 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय है |

'पत्ता खोर' उपन्यास का अध्यन करने के उपरांत यह निष्कर्ष स्थापित किया गया कि नशा केवल व्यक्ति के लिए नहीं वरन् उनके परिवार और व्यापक रूप से समाज के लिए भी हानिकारक होता है| मादक द्रव्य, व्यसन करनेवाले नारों की वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति में मदिरा पीने या अन्य मादक पदार्थों के नियमित रूप से सेवन करते रहने की इच्छा प्रबल रहती है| इच्छा प्रबल होने पर वह उसे किसी भी तरह पाना चाहता है| द्रव्य का आदी होना या नियमीत सेवन करना सूचित करता है| निर्भरता शारीरिक भी हो सकती है और मानसिक भी| शारीरिक निर्भरता द्रव्य के बंद कर देने से व्यक्ति दर्द, पीड़ा, उलझन, व्यथा एवं बीमारी का सामना करता है|

सूखते चिनार, खुले गगन के लाल सितारे, सलाम आखिरी उपन्यास का अध्ययन करने के उपरांत यह कहा गया है कि पति-पत्नी संबंधों की प्रत्येक युग में अपनी अपनी मान्यता रही है एक समय था जब पत्नी अपने पति को देवता मानकर उसकी पूजा करती थी उसकी सत्ता और अधिकारों को स्वीकार करती थी किंतु आज स्थापित मान्यताओं एवं संबंधों के पुनर्मूल्यां-कन, नारी की आर्थिक स्वतंत्रता ने पति की सर्वाधिकारी सत्ता पर प्रश्न चिन्ह अंकित कर दिया है|

आधुनिक समाज में पति-पत्नी संबंधों का एक और नया रूप विकसित हुआ है जिसमें पति की विचित्र स्थिति देखने को मिलती हैं| एक और वह चाहता है कि उसकी पत्नी आधुनिक हो किंतु दूसरी ओर वह अपनी सत्ता भी उस पर थोपना चाहता है| पति पत्नी संबंधों का स्वरूप यहां तक पहुंच चुका है कि पति स्वार्थ के लिए स्वयं अपनी पत्नी का प्रयोग करता है|

पत्ताखोर, सूखते चिनार , खुले गगन के लाल सितारे , सेज पर संस्कृत उपन्यास का अध्ययन करने के उपरांत ये निष्कर्ष से स्थापित किया गया है कि अर्थ हमारे जीवन को अधिक प्रभावित कर रहा है जीवन की बहुत सी समस्याओं सत्ता प्राप्ति की होड़ प्रतिस्पर्धा महंगाई से जूझते व्यक्ति का संघर्ष , निर्धनता से पिस्ता व्यक्ति रिश्वतखोरी , भ्रष्टाचार , कालाबाजारी मुनाफाखोरी, घोटाले, मानवीय मूल्यों का रास , नैतिकता में आए परिवर्तन आदि के मूल में अर्थ ही है सामान्यतया व्यक्ति का जीवन अर्थ के जाल में जकड़ा हुआ है|

शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी युवाओं को नौकरी नहीं मिल रही जिसके कारण उनमें आक्रोश तथा गहरी निराशा व्याप्त है बेरोजगारी के कारण ही व्यक्ति को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है यहां तक आत्महत्या करने का भी विचार उसके मन में आने लगता है|

PRINCIPAL